PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 5, ISSUE 2

'अंजो दीदी' नाटक में मनोविज्ञान

डॉ. भरत ए. पटेल
हिन्दी विभागाध्यक्ष
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज , विजयनगर, जि. साबरकांठा
गुजरात, भारत |

उपेन्द्रनाथ ' अश्क ' ने साहित्य-लेखन की शुरुआत उर्दू से की थी , परंतु बाद में मुंशी प्रेमचंद की सलाह से हिन्दी में लिखना शुरू किया | वे बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे | उन्होंने साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में अपनी कलम चलायी है | वे मँजे हुए कथाकार के रूप में विशेष प्रसिद्ध हुए हैं , पर साथ ही उन्होंने नाटक , एकांकी , काव्य , संस्मरण , आलोचना आदि पर भी अधिकार के साथ लिखा है | 'लौटता हुआ दिन ',' बड़े खिलाड़ी ',' पैंतरे ',' आदि मार्ग ', ' कैद ',' उड़ान ',' छठा बेटा ',' स्वर्ग की झलक ',' अंजो दीदी ',' अलग-अलग रास्ते ',' जय-पराजय ',' अंधी गली ',' विद्रोही ' आदि अश्कजी के प्रसिद्ध नाटक हैं |

'अंजो दीदी ' अश्कजी की सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रौढ़ नाट्यकृति है | नाटककार ने इसमें पारिवारिक समस्या को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है | हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर ने " 'अंजोदीदी ' : एक मूल्यांकन " नामक लेख में (जो इस नाटक के आरंभ में रखा हुआ है) लिखा है - " 'अंजो दीदी ' मनोविकारों के घात-प्रतिघात और उनकी प्रतिक्रिया की कहानी है | कोई दैवी घटना वहाँ नहीं है , आकस्मिक रूप से बदलनेवाली परिस्थितियाँ वहाँ नहीं हैं , जो जीवन को अँधेरे या उजेले मोड पर डाल देती है | उसकी कथा की प्रेरक शक्ति है - मनोविज्ञान , जो उस विशिष्ट परिवार की वास्तविक स्थिति से प्रभावित होकर , निरंतर विकसित होता जाता है और नाटकीय सूत्र को बढ़ाता जाता है | केवल व्यक्तियों और मान्यताओं के संघर्ष से वर्गीय

यथार्थ की आत्मा जैसे मुखर हो उठी है और उनके रहन-सहन , अतिशय पाबंदी , नियंत्रण और मशीनी-सोच की सारी विषमता साकार हो उठती है | " [१]

' अंजो दीदी ' नाटक का कथानक आभिजात्य वर्ग के परिवार से सम्बद्ध है | इस नाटक की नायिका अंजो (अंजली) को नानाजी ने गोद लिया था | नानाजी से ही उसे जीवन को नियंत्रित और अनुशासित रखने के संस्कार मिले हैं | ये संस्कार अंजो के मन में इतने गहरे गड़े हुए हैं कि सदैव उस पर तत्परता से हावी रहते हैं | अंजली दुबले-पतले , इकहरे शरीरवाली अभिजात कुल की स्त्री है | उसके चेहरे पर उसका अखण्ड अहम् झलकता है | उसने अपने जीवन को , अपने परिवार के सदस्यों - पति और पुत्र , यहाँ तक कि नौकरों के जीवन को भी अनुशासित कर रखा है | घर के सभी सदस्यों का उठना-जागना , खाना-पीना , पढ़ना-सोना सब कुछ घड़ी की सुइयों के मुताबिक परिचालित होता दिखाई देता है | समय की पाबन्दी की सनक अंजली पर इस कदर सवार है कि मनुष्य कि सहज जिंदगी को घड़ी की तरह यंत्रवत बना देती है | वह अपनी सखी अनिमा से बातचीत करते समय कहती है - " जिंदगी स्वयं एक महान घड़ी है | प्रात: -संध्या उसकी सुइयाँ हैं | नियमबद्ध एक-दूसरी के पीछे घूमती रहती है | मैं चाहती हूँ -मेरा घर भी घड़ी ही की तरह चले | हम सब उसके पुर्जे बन जाएँ और नियमपूर्वक अपना-अपना काम करते जाएँ | " [२] सुबह आठ बजते ही सब को नहा-धोकर नाश्ते के लिए मेज पर उपस्थित हो जाना पड़ता है | आठ बजे मेज पर नाश्ता न पहुँचने पर मुन्नी को डाँट पड़ती है | अहम् वादी व्यक्ति अपने विचारों और मान्यताओं को दूसरों पर थोपने का भरसक प्रयत्न करता है | इन्द्रनारायण अंजली के पति हैं | विवाह के पूर्व वे मनमौजी , फक्कड़ और लापरवाह थे , परंतु उनका व्यक्तित्त्व इतना सशक्त नहीं था , अत: उन पर अंजली का अहम् वादी व्यक्तित्त्व और नियंत्रण एवं अनुशासन का कठोर कुचक्र हावी हो जाता है | अनिमा जब कहती है कि जीजाजी को तो बड़ा बुरा लगता होगा यों बँधना ? तब वह कहती है - " बुरा ! बड़े सिटपिटाये थे पहले- पहल , पर मैं ले ही आयी अपने ढब पर | सच कहती हूँ , मुझे नीरज पर इतनी जान नहीं खपानी पड़ी , जितनी तुम्हारे जीजा जी पर | कोई भी तो कल न थी सीधी | न सफाई का खयाल , न समय का .... जानती हो , कितनी माथा-पच्चीसी करनी पड़ी है इनके साथ ? कितनी भूख-हड़तालें की हैं ? कितनी बार रूठकर पीहर जा-जा बैठी हूँ | " [३] इन्द्रनारायण को न चाहते हुए भी आँजो के अनुशासन और व्यवस्था को ओढ़कर जीना पड़ता है | वे चाहकर भी दिल्ली चाट , पानी

के बताशे नहीं खा सकते , ना ही शराब पी सकते हैं | ताजा प्रेस किया हुआ कोट , पतलून , हैट , टाई वगैरह धारण करना पड़ता है |

अंजो का भाई श्रीपत बिल्कुल विलोम स्वभाव का है | वह मनमौजी , फक्कड़ , बेपरवाह , सैलानी और घुमक्कड़ है |उसने अपनी जिंदगी मेन कोई कड़े नियम नहीं पाले हैं | जब जो जी चाहे करके आनंद उठाता रहता है | वह अंजो के घर आकर उसके व्यवस्था-तंत्र को शिथिल कर देता है | वह इन्द्रनारायण , नीरज , अनिमा , मुन्नी आदि को दहीबड़े , पानी के बताशे , चाट ,मूँगी के लड्डू , कुल्फी वगैरह खिलाकर सब को खुश कर देता है , परंतु अंजो को नाराज कर उसके घर के व्यवस्था-तंत्र को हिलाकर रख देता है | श्रीपत अपने भाँजे नीरज से पूछता है कि तू क्या बनना चाहता है ? तब वह कहता है - ' मैं क्रिकेट का कप्तान बनना चाहता हूँ | ' अंजो द्वारा निर्धारित समयपत्रक में नीरज को सिर्फ दो घण्टे खेलने को मिलता है | वह अपने बेटे से कहती है कि क्रिकेट बड़ा निकम्मा खेल है , चोट लग जाती है | वह अपने बेटे को डिप्टी कमिश्नर बनाना चाहती है | मामा श्रीपत द्वारा प्रोत्साहित नीरज और अंजली का यह संवाद दृष्टव्य है -

" नीरज : ममी , मैं तो खेलूँगा |

अंजली : (क्रोध से) क्या ....? (उसके कंधों को थपथपाते हुए नर्मी से) चलो नीरू बेटे !

नीरज : छै घण्टे खेलूँगा और दो घण्टे पढ़ूँगा |

अंजली : (क्रोध से) क्या कहते हो ! (नर्मी से) चलो बेटा , तुम्हारे मास्टर साहब आनेवाले हैं |

नीरज : मैं क्रिकेट का कप्तान बनना चाहता हूँ |

अंजली : (क्रोध को बरबस रोककर नर्मी के साथ) पागल ! सिर-पैर तुड़वाएगा क्रिकेट का कप्तान बनकर | तुझे तो डिप्टी कमिश्नर बनना है |

नीरज : मुझे डिप्टी कमिश्नर नहीं बनना | मैं तो क्रिकेट का कप्तान बनूँगा |

अंजली : (क्रोध को रोक सकने में असफल होकर) चल-चल , बन लिया क्रिकेट का कप्तान , अब चलकर पढ़ | मास्टर साहब के आने का समय हो गया है | (उसे कान से खींचती हुई ले जाती है |) " [४]

इस प्रकार अंजली अपनी इच्छाओं को अपने बेटे पर लादकर उसके क्रिकेट के कप्तान बनने की महेच्छा का , क्रिकेट खेलने के शौक का गला घोंट देती है | यही मानसिकता आज के जनमानस में भी देखने को मिलती है | हर माँ-बाप अपने बेटे या बेटी को डाक्टर , इंजीनियर या आई.ए.एस. , आई.पी.एस. बनना चाहते हैं | बच्चों पर अपनी महत्त्वकांक्षाओं को थोपकर उनके शौक और इच्छाओं को दफन कर दिया जाता है | पूरे मन से रस-रुचि के साथ कोई काम किया जाता है तो इसमें अवश्य सफलता मिलती है | परंतु बेमन से किया गया काम ' न घर का न घाट का ' कहावत को सार्थक सिद्ध करता है |

मनोविज्ञान कहता है कि इच्छाओं का दमन नहीं करना चाहिए | परंतु यहाँ अंजो घर के किसी भी सदस्य की इच्छा का सम्मान नहीं करती , वह उन पर अपनी पसंद , अपने विचार , अपनी आदतें थोपती चली जाती है | मनुष्य अपने जीवन को व्यवस्थित और सुचारु बनाने के लिए कुछ नियम बनाता है | परंतु एक मनुष्य द्वारा बनाए गए नियम सदैव सभी मनुष्यों के लिए उचित और लाभदायी नहीं हो सकते | क्योंकि हर मनुष्य का अपना अलग स्वभाव होता है , अलग प्रकृति होती है | वह अपनी इच्छा के अनुसार जीने की स्वतंत्रता चाहता है | कभी-कभी कुछ कठोर नियम लौह-श्रृंखलाओं से प्रतीत होते हैं | मनुष्य इन कठोर बंधनों से मुक्त होकर दूर भाग जाना चाहता है | पर कुछ लोग तानाशाह बनकर सब को इन में जकड़ रखना चाहते हैं | अंजली इनमें से एक है | इसके घर के नियम और पाबन्दियाँ अत्याचार की सीमा को स्पर्श कर जाते हैं | अंजली के पति वकील इन्द्रनारायण का यह संवाद सबकुछ स्पष्ट कर देता है -

" और अंजो जैसे चलाती है , वैसे चले जाते हैं | क्यों अंजो ! दिया कभी शिकायत का मौका हमने तुम्हें ? (हँसते हैं) दिन में तीन बार नहाते हैं , चार-चार बार हाथ-पाँव धोते हैं , कम-से-कम चार बार खाते हैं और पाँच बार कपड़े बदलते हैं | सफाई , वक्त की पाबंदी , सभ्य-समाज के तौर-तरीके - सबका पूरा-पूरा ख्याल रखते हैं | (हँसते हैं) अंजो के साथ शादी करने के बाद लगता है , जैसे हम तो अछूत थे , अंजो ने आकर हमारा उद्धार किया |

" ५ इस संवाद में इन्द्रनारायण की विवशता स्पष्ट झलकती है , उनकी स्वतंत्रता का क्रंदन स्पष्ट सुनाई पड़ता है | क्योंकि एक फक्कड़ , मनमौजी और लापरवाह इंसान अंजो के सभ्यता और शिष्टाचार के अत्याचार रूपी शिकंजे में फँसे मर्माहत हैं |

स्प्रिंग को जितना दबाओगे तो वह दबेंगी , पर जरा-सा दबाव शिथिल होने पर दुगुनी ताकत से उछलती है | वैसे ही अंजो ने अपने पति को इतना दबाकर रखा है कि वह भीतर से व्याकुल और विवश दिखाता है | पर इन्द्रनारायण का साला श्रीपत उसे दिलरुबा हॉटेल में ले जाता है और वहाँ उसे शराब पिलाता है | शराब में धुत जब वे घर पहुँचते हैं तो अंजो को अपने अहम् और व्यवस्था-तंत्र पर आसमान टूट पड़ता नजर आता है | जब इन्द्रनारायण का शराब पीकर आना लगभग रोज की घटना बन जाती है तो इसे सहन करना अंजो के लिए असह्य

हो जाता है | वह जहर खाकर आत्महत्या कर लेती है | लेकिन इससे पहले वह बहू के रूप में ओमी को पसंद कर घर ले आई थी | उससे सीखकर बहू भी अब इसी रास्ते पर चलने लगी है | अंजो की मृत्यु के पश्चात भी अंजो की शिस्तबद्धता और कायदे-कानून बरकरार हैं | अंजो की मृत्यु की से इन्द्रनारायण शराब पीना छोड़ देते हैं और अंजो जैसा चाहती थी इस ढर्रे पर जीवन जीते नजर आते हैं |

इस प्रकार ' अंजोदीदी ' नाटक मुख्य पात्र अंजली की जड़ मानसिकता पर आधृत है | यह जड़ता मनुष्य को किस प्रकार मृत्यु के कगार पर ले जाती है और दूसरों के जीवन को किस प्रकार नर्कागार बना देती है , इसका मार्मिक चित्रण नाटककार ने बखूबी किया है |

संदर्भ-संकेत :

१. अंजोदीदी , उपेन्द्रनाथ अश्क - पृष्ठ = १८
२. वही , पृष्ठ = ३१
३. वही , पृष्ठ = ३१
४. वही , पृष्ठ = ४५
५. वही , पृष्ठ = ३२-३३